हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, II Sem.

"क्या भूलूँ क्या याद करूँ" के आधार पर बच्चन के आत्म-कथा लेखन के प्रयोजन का विवेचन करें।

कोई भी कृति प्रयोजन रहित नहीं होती है। आत्मकथा लेखन के क्रम में बच्चन ने निम्नलिखि प्रयोजनों को दृष्टिपथ में रखा है —

आत्मप्रकाशन की अदम्य भावना — बच्चन ने कहा है — "मैं यह भी बताना चाहता था कि आत्म-चित्रण मैंने किस मनोवृत्ति से किया है, पर जब शब्दों में उसे बता सकता था, उनसे कहीं अधिक समर्थ और ~~सश~~ सशक्त शब्दों में आज से लगभग चार सौ पूर्व फ्रांस का एक महान लेखक, मानतेन अपना म-चित्रण करते समय उसे व्यक्त कर चुका है। आप इस आत्म-चित्रण को पढ़, आप उसे लें। आप इसे कृति के प्रथम पृष्ठ के पूर्व पायेंगे चाहता हूँ कि लोग मुझे मेरे सरल, स्वाभ साधारण रूप में देख सकें। मैं अपने

गुण - दोष जग - जीवन के सम्मुख रखने जा रहा हूँ, पर ऐसी स्वाभाविक शैली में जो लोक - शील से मर्यादित हो।"

जब लेखक की भावनाएँ अभिव्यक्ति - हेतु आतुर होती हैं तो वह अपने सृजन में विवश होकर लीन हो जाता है। इस स्थिति में बच्चन अपनी भूमिका में लिखते हैं — "लेखन द्वारा अपने को अभिव्यक्त करते ए 40 वर्षों से अधिक हो चुके हैं। मैं हृदय पर ाथ रखकर कह सकता हूँ कि मैंने ऐसा कुछ नहीं खा जो मेरे अन्तर में नहीं उठा, और उसमें नहीं ा - घुमड़ा। ... मुझे कई वर्षों से लग रहा था, मैं अपने अन्तर में निरन्तर उठती स्मृतियों को - न कर डालूँगा, तब तक मेरा मन शांत नहीं होगा।

वैसे तो लेखक अपने भोगे हुए यथार्थ जीवन अभिव्यक्ति सम्पूर्ण कलाओं में प्रकारान्तर से करता । लेकिन आत्मकथा में यह स्थिति अत्यन्त - भी है और वांछनीय भी। बच्चन की इसकी स्पष्ट निदर्शन है। उन्होंने कहा है कि आत्मसंस्कारी है, वैसे ही आत्मकथा

[illegible] है। कहने के डर से मुक्त [illegible] को
[illegible] सकती है। [illegible] ही [illegible] पड़ी। उनका
[illegible] [illegible] में लिखना मैंने पढ़ा -
[illegible] [illegible] [illegible], भोगना-सहना,
लिखना। [illegible] [illegible] [illegible]
अनुभव [illegible] किया, इसका मैंने इसके ही कारण
साथ में अपने जीवन में कभी नहीं किया।"
किसी मानसिक अन्तर्द्वन्द्व की भाँति अथवा
आत्मरहस्योद्घाटन की उद्घोषणा इस कृति में नहीं
है। किन्तु लेखक ने अनेक स्थलों पर प्रतिपादित किया
है कि आत्मकथा लिखकर उसे पूर्णतृप्ति और मुक्ति-
अहसास हुआ है। जिस प्रकार इतिहास पुरुष
हासिक घटनाओं का विवेचन करते हैं, उसी प्रकार लेख
या कलाकार अपनी आत्मकथाओं में अपनी रच
सृजन-प्रक्रिया की विवेचन करने का विशेषाधिकार
वैसे जीवनी में भी यदि वे किसी साहित्य
चनाप्रक्रिया का वर्णन अवश्य करते हैं।
यथार्थ चित्रण आत्मकथा में संभव
ही नहीं हो सकती। इस आत्मकथा में

और परोक्ष दोनों रूपों में रचना-प्रक्रिया का विवेचन
हुआ है, जैसे — "मुझे याद है, मैंने उसके बालों की
एक लट अपनी उँगली में लपेट ली और आँखें मूँद
ली पर न श्यामा सो रही थी और न मैं सो रहा था।
बहुत दिनों बाद मैं उस रात के भावों को वाणी देने
योग्य अपने को पा सका।
"मधुशाला" से मेरे चेतन, अवचेतन, अतिचेतन,
उर, अनुभूति में संचित स्मृति-कल्पना, भय, आशा
शा, वेदना-संवेदना, हर्ष-विमर्श-संघर्ष सबका बड़ा
ा हुआ। 'मधुशाला' के बाद मैंने 'मधुबाला' के
लिखना शुरू किया जैसे अभी पूरा क्षरण नहीं हु
वास्तव में वह पूर्ण 'मधुकलश' के साथ हुआ।
ार के विवेचन-विश्लेषण से बच्चन की आत्मक
खण्ड भरे पड़े हैं और यही स्थल आत्मकथ
- तत्व भी हैं। बच्चन ने अपनी इस आत्म
में परनिन्दा और आक्षेप या कटाक्ष करने
बचना चाहा है। लेकिन फिर भी कुछ स्थ
गये हैं। जैसे सुमित्रानन्दन पंत के विषय में
टाक्ष जैसी ही है — जब

तुकबन्दी सधने लगी और मैं अपने इति होने की संभावना से व्याकुल होने लगा, तो मैंने भी अपने काव्य को बढ़ने के लिए छोड़ दिया। मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ कि मेरा अनुकरण उनके बालों तक ही सीमि रहा, यदि मैं उनकी शैली का अनुकरण करता तो डूब गया होता।"

आत्मकथा की विशिष्ट उपयोगिता है कि उससे प्राप्त करके आगामी पीढ़ियों को अपने पथ आने वाले कटकों और कंकरों का ज्ञान हो सके। इ करण आत्मकथा वैयक्तिक निधि होकर भी सर्वलो हिताय सिद्ध होती है। वैसे भी मानवीय जीवन में सामाजिकता की सुदृढ़ नींव और भित्ति इसी प्रकार तैयार होती है कि पूर्व पीढ़ी के उदाहरण आगा पीढ़ी के लिए मील पत्थरों के निशान बन जा